संपादकीय

भारतीय समाज उथल-पुथल की स्थिति से गुजर रहा है। भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्याएं और प्रशासनिक अव्यवस्था आदि वर्तमान सार्वजनिक विमर्श के मुद्दे बने हुए हैं। हर तरफ एक धुंधलका नजर आता है। ऐसी स्थिति में कि वर्तमान समाज की समस्याओं को समग्रता में और उचित तरीके से व्याख्यायित कर पाने के हमारे बौद्धिक औजार कुछ भौंथरे जान पड़ते हैं। इस वक्त नए कानून एवं पुरानों में बदलाव के जरिए सुधार की कोशिशें की जा रही हैं लेकिन ये कितनी कारगर होंगी, कह पाना मुश्किल है। यह समझने की आवश्यकता है कि कोई भी समाज सिर्फ कानूनों से नहीं चलता।

दिल्ली के जघन्य गैंगरेप कांड ने समाज में नैतिकता, जेण्डर समता, महिला सुरक्षा एवं प्रशासनिक सुधार आदि पर बहस को और तेज किया है। इस बहस से शिक्षा भी अछूती नहीं है। इस घटना के बाद शिक्षा हलके में भी हरकत शुरू हुई है। निश्चित रूप से समाज की दशा और दिशा पर शिक्षा के लिहाज से सोचे जाने की जरूरत है। रोज-ब-रोज घटने वाली इन घटनाओं को देख-सुनकर यह सवाल उठता है कि क्या शिक्षा वास्तव में *शिक्षित* व्यक्ति की किसी धारणा को गढ़ने में सफल है? इसमें कोई शक नहीं है कि एक शिक्षित व्यक्ति को एक नैतिक व्यक्ति भी होना चाहिए। लेकिन शिक्षा में ऐसा क्या किया जाए कि एक व्यक्ति नैतिक बन पाए और जो किया जाए उसके तरीके क्या हों, यह विचार का विषय है। शिक्षा के जरिए इन घटनाओं को रोकने की युक्तियां सोची जा रही हैं और पाठ्यक्रमों में बिना अधिक विचार किए अनेक बदलाव लाने की पेशकश की जा रही हैं।

ऐसा लगता है कि भारतीय समाज एक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है और उसकी कोई दिशा तय नहीं है। ऐसे दौर में समाज और सरकारों के लिए जरूरी हो जाता है कि वह ऐसी घटनाओं पर न सिर्फ उचित कार्यवाही करें बल्कि गंभीरता से उनके कारणों का भी पता लगाएं। वर्तमान समय में सरकार और सामाजिक संस्थाओं में ऐसी घटनाओं के प्रति एक बौखलाहट जरूर दिखाई देती है। ऐसी समस्याओं के टिकाऊ समाधान के लिए किन्हीं अपराधियों को कड़ी सजा दिला देना भर हल नहीं हो सकता बल्कि इनसे निपटने के लिए दूरगामी रणनीति की आवश्यकता होगी। इस रणनीति को बनाने का एक जरिया अपराध के कारणों का पता लगाने के लिए शोध हो सकता है कि ऐसी घटनाओं के लिए कौनसे मनोवैज्ञानिक-सामाजिक-सांस्कृतिक और संरचनागत कारण जिम्मेदार हैं। सरकार को पहल करनी चाहिए कि समाज में बढ़ रहे अपराध के कारणों का पता लगाने के लिए देश के जानेमाने मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों और अपराध शास्त्र के क्षेत्र में काम करने वाले विद्वानों से विधिवत अध्ययन करवाए। अन्यथा ऐसी घटनाओं के कारणों पर हम कल्पित व्याख्याएं करते रहेंगे और फौरी हल सुझाते रहेंगे। इससे पता चल पाएगा कि दिल्ली गैंगरेप और ऐसी तमाम जघन्य घटनाओं के पीछे क्या कारण हैं। अपराध शास्त्र के क्षेत्र में ऐसे अध्ययनों का भारतीय संदर्भ में बेहद अभाव है। अपराध को लेकर भारतीय समाज के संदर्भ में गंभीर अध्ययन होने चाहिएं। ये अध्ययन अपराधों को रोकने में सामाजिक एवं शैक्षिक हस्तक्षेप के लिए आधारभूमि प्रदान कर सकते हैं। लेकिन ऐसी कोई पहल इन घटनाओं के बाद नजर नहीं आती।

अपराधों और खासतौर से महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों को रोकने के लिए प्रशासनिक सुधार, कानूनों में बदलाव, पुलिस सुधार आदि की सख्त आवश्यकता है लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले

किसी भी व्यक्ति के दिमाग में यह सवाल आता है कि इन्हें रोकने में शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है? इस सवाल का जवाब आसान नहीं है। अकेले शिक्षा को संपूर्ण बदलाव के लिए जिम्मेदार मान लेना एक मासूम समझ होगी। दिल्ली की घटना और ऐसी ही अनेक घटनाओं के बाद शिक्षा में बदलाव की कोशिशें शुरू हुई हैं। यह सुझाया जा रहा है कि स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा, सेक्स एजुकेशन और लड़कियों को रक्षात्मक उपायों की शिक्षा दी जाए। तात्कालिक परिस्थितियों में ऐसा लग सकता है कि यह महिलाओं के खिलाफ होने वाले सब अपराधों को रोकने के कारगर तरीके हो सकते हैं। यह कितने कारगर होंगे इस पर गंभीरता से विचार किए जाने की आवश्यकता है।

दिल्ली गैंगरेप कांड के बाद आपराधिक कानून में बदलाव के लिए जस्टिस जे. एस. वर्मा की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने भी शिक्षा में बदलाव के बारे में अपने विचार दिए हैं। जस्टिस वर्मा महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों की पड़ताल हमारे उस सामाजिक यथार्थ करते हैं जिसमें जेण्डर असमानता, महिलाओं के बारे में बनी रूढ़छवियां और पितृसत्तात्मक समाज की गहरी पैठी जड़ें आदि हैं। यह सही है कि सभी सामाजिक समस्याओं का निदान शिक्षा के द्वारा मुमकिन नहीं है लेकिन इन्हें एक हद तक चुनौती देने में शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। शिक्षा मुख्यतः मानसिक स्थितियों में बदलाव के लिए काम करती है। जेण्डर असमानता, रूढ़छवियां और पितृसत्ता आदि मानसिक छवियां हैं और निश्चित रूप से शिक्षा इसमें बदलाव ला सकती है। लेकिन इस बदलाव का सही तरीका क्या हो, यह विचारणीय मुद्दा है। नैतिक शिक्षा, सेक्स एजुकेशन और जीवन कौशल शिक्षा जैसे तरीके इसमें कितना योगदान कर पाएंगे, यह सवालों के दायरे में है। एक किताब के जरिए उपदेशपरक कहानियां पढ़ाने या दीवारों पर नारे लिखवाने या स्कूल की सभा में उपदेशपरक भाषण देने से नैतिक शिक्षा की असफल तरकीबें हिन्दुस्तान में बहुत हो चुकी हैं। यह समझना एक भूल है कि नैतिक शिक्षा उपदेशों से संभव है। नैतिक शिक्षा इंसानी आचरण के बारे में है और इसे वयस्कों या शिक्षकों के आचरण तथा सामाजिक एवं स्कूली माहौल में देखकर ही बेहतर सीखा जा सकता है।

स्वयं के देह के बारे में जानना और जागरूक होना किसी भी व्यक्ति के लिए बेहद जरूरी है। यह जागरूकता उस मिथकीय ज्ञान से शिक्षार्थियों को मुक्त कर सकती है जो समाज में बिना किन्हीं वैज्ञानिक आधारों के प्रवाहित होता रहता है और अनेक शारीरिक-मानसिक बदलावों के प्रति बच्चों को असहज और कुंठित करता है। फिर इसे जीव विज्ञान या विज्ञान के पाठ्यक्रम से अलग करके देखे जाने की आवश्यकता क्या है? लेकिन सेक्स एजुकेशन के पैरोकारों से यह पूछे जाने की जरूरत है कि सेक्स एजुकेशन जेण्डर असमानता और पितृसत्ता की जकड़ को कैसे कम कर पाएगी?

जीवन कौशल शिक्षा को आजकल जीवन में आने वाली समस्याओं से निजात पाने का एक बहुप्रचारित जरिया माना जाने लगा है। संभवतः यह दैनिक जीवन में समस्याओं पर सोचने का एक नजरिया विकसित करने में मदद कर सकती है। लेकिन सवाल यह है कि क्या जीवन कौशल शिक्षा में सुझाई गई विषयवस्तु को पाठ्यचर्या के शेष क्षेत्रों से अलग करके देखा जा सकता है? यदि इसे अलग करके देखा जा सकता है तो शिक्षा में शेष क्या रह जाएगा? फिर स्कूली शिक्षा में शिक्षा के बजाय बारह वर्षीय जीवन कौशल शिक्षा को ही लागू कर दिया जाना चाहिए। जीवन कौशल शिक्षा के जरिए समाज में बदलाव के ये रास्ते बहुत दूर तक नहीं जाते। यदि शिक्षा को सामाजिक बदलाव का माध्यम बनाना है तो ज्यादा सुविचारित और कारगर कदम उठाए जाने की जरूरत होगी। तात्कालिक प्रभावों में आकर किए जाने वाले शैक्षिक बदलाव टिकाऊ नहीं होंगे। ◆